



Original Article

‘यमदीप’ उपन्यास में किन्नर समस्या

डॉ. अजित विठ्ठल लिपारे

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

सदगुरु गाडगे महाराज कॉलेज, कराड

Manuscript ID:

IJAAR-C130372

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 374 - 381

Submitted: 06 Feb. 2026

Revised: 16 Feb. 2026

Accepted: 20 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

डॉ. अजित विठ्ठल लिपारे

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22787277

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22787277>



Creative Commons



सार:

‘यमदीप’ उपन्यास किन्नर जीवन की संवेदनात्मक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक वास्तविकताओं का सशक्त चित्रण करता है। इसकी रचना लेखिका के मन में उठे उन प्रश्नों से प्रेरित है, जो किन्नरों के अस्तित्व और उनकी पीड़ा से जुड़े हैं। उपन्यास की कथा नाजबीबी (किन्नर) और मानवी (पत्रकार) के माध्यम से समानांतर रूप में विकसित होती है, जहाँ किन्नर और नारी विमर्श का समन्वय दिखाई देता है। नाजबीबी का चरित्र करुणा, ममता और मानवता का प्रतीक है, जबकि मानवी समाज में स्त्री-सशक्तिकरण की आवाज बनती है। किन्नर समुदाय की आर्थिक दयनीयता, सामाजिक उपेक्षा और पारिवारिक बहिष्कार को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। साथ ही, नारी उत्पीड़न, भ्रष्टाचार और सामाजिक विसंगतियों को भी उजागर किया गया है। सरल भाषा और विशिष्ट शब्दावली उपन्यास को यथार्थपरक बनाती है। समग्रतः यह कृति सम्मान, पहचान और समानता की खोज का संवेदनशील दस्तावेज है।

मुख्य शब्द: किन्नर, सामाजिक उपेक्षा, मानवीय संवेदना, नारी, आर्थिक संकट, पहचान का संघर्ष, सामाजिक विसंगतियाँ, मानवतावाद आदि।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

डॉ. अजित विठ्ठल लिपारे. (2026). ‘यमदीप’ उपन्यास में किन्नर समस्या. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 374 - 381. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22787277>

प्रस्तावना:

हिन्दी उपन्यासों में किन्नर विमर्श की कहानी सदियों से चली आ रही है। किन्नरों के जीवन संघर्षों, समाज में उनकी क्या स्थिति है तथा अनेकानेक पक्षों पर उपन्यासकारों ने अपनी रचनाओं में वाणी देने का प्रयास किया है। हमारा पूरा समाज दो

स्तम्भों पर खड़ा है पुरुष और स्त्री। आदिम सभ्यता से ही दोनों का काम आपसी सहयोग से बच्चे पैदा करना और मानव जाति को आगे बढ़ाना रहा है। लेकिन हमारे समाज में इन दो लिंगों के अलावा भी एक अन्य प्रजाति का अस्तित्व मौजूद है। जो न



पुरुष है न स्त्री। वह न सम्बन्ध बना सकता है और न ही गर्भ धारण कर सकता है। समाज में इन्हें हिजड़ा, किन्नर, नपुंसक आदि कई नामों से सम्बोधित किया जाता है। राजपाल हिंदी शब्दकोश में किन्नर शब्द का अर्थ है-“1. स्वर्ग के गायक, 2. गानेबजाने का पेशा करनेवाली एक जाति।”¹

हिंदी कथासाहित्य में उत्तर आधुनिक काल में कई विमर्शों पर चर्चा हुई किन्तु समाज के बहिष्कृत कहलाने वाले किन्नर समुदाय के विषय में समाज एवं साहित्य जैसे मौन ही है यही सबसे बड़ी समस्या है। अस्पष्ट लैंगिक पहचान वाला यह वर्ग संसार के सभी समाजों में अवहेलना का शिकार बनता आया है। समाज में किन्नरों का एक वर्ग है जिसे परिवार से लेकर बाजार तक कहीं पर भी कोई काम नहीं दिया जाता। आज यह समुदाय सामाजिक आर्थिक स्थिति के कारण भीख मांगने तथा वेश्यावृत्ति करने की लिए अभिशप्त है। उसे सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक, मानसिक भेद तथा शोषण के दौर से गुजरना पड़ता है।

‘यमदीप’ उपन्यास में किन्नर विमर्श:

नारी, दलित, आदिवासी आदि की श्रेणी में एक और बहिष्कृत, उपेक्षित एवं शोषित वर्ग है किन्नर। यह आर्थिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से दुःखी है, व्यथित है, अपमानित है और मानसिक दृष्टि से कुंठित है। इसलिए किन्नर विमर्श की आवश्यकता अनुभव होती रही है। साहित्यकारों ने किन्नर विमर्श को दृष्टिकेन्द्र में रखकर उपन्यास, कहानी, नाटक, आत्मकथा विधा में लेखन किया है। विशेष रूप से उपन्यासों का सृजन हुआ जिसमें किन्नरों के आर्थिक, सामाजिक समस्या का गहन चित्रण किया गया है। इस परंपरा में नीरजा माधव द्वारा छब्बीस अध्याय और दो सौ अठ्ठाइस पृष्ठों में विभक्त

उल्लेखनीय उपन्यास ‘यमदीप’ है, जो सन् 2002 में प्रकाशित हुआ है।

नीरजा माधव जी के मन में किन्नरों के संबंध में अनेकानेक संबंध में अनेकानेक प्रश्न उभरे जैसे- इनका दोष क्या है? ये लोग अभिशप्त जिंदगी जीने के लिए मजबूर क्यों है? सामान्य लोगों की तरह जीवन जीने की अपेक्षा ये लोग असामान्य जीवन क्यों जी रहे हैं? आदि प्रश्न थे जिन्होंने उपन्यासकार के मन-मस्तिष्क को झकझोरा। लेखिका को यह सभी प्रश्न कांटों की तरह चुभने लगे, परेशान करने लगे और इसका ही परिणाम है यह ‘यमदीप’ उपन्यास। डॉ. जितेंद्र कुमार जे. वणझारा नीरजा माधव द्वारा लिखित उपन्यास ‘यमदीप’ के संबंध में लिखते हैं, “नीरजा माधव ने यमदीप उपन्यास में किन्नरों की दशा का वर्णन कर हमारा ध्यान केंद्रित करने का प्रयास किया है। इसकी कथा में इस समुदाय के सामाजिक अस्तित्व को स्थापित करने का प्रयास किया है। किन्नरों के मनुष्य होने का प्रमाण प्रस्तुत किया है।”²

उपन्यास के कथाकेन्द्र में दो प्रमुख पात्र हैं एक नाजबीबी और दूसरी मानवी। नाजबीबी किन्नरों का प्रतिनिधित्व करती है तो मानवी स्त्री विमर्श का प्रतिनिधित्व करती है। उपन्यास का प्रारंभ एक पगली की दर्द भरी चीख से होता है वह एक गली में मटमैली सफेद साड़ी में खून से लथपथ पड़ी है। गली के कुछ मनचले लड़के यह दृश्य देख रहे हैं तभी उनकी नजर छक्का मौसी पर पड़ती है। चालीस वर्षीया नाजबीबी अपने साथियों के हाथ विशेष अंदाज में कमर लचकाती बीड़ी पीती वहाँ आती है। उसके साथ चमेली, शबनम और मंजू है। नाजबीबी उस पगली के पास जाती है। किन्नर है तो तो क्या हुआ उसकी संवेदना मरी नहीं है। पगली प्रसव वेदना से तड़प रही है। नाजबीबी दायी बनती है। वह पगली एक बच्ची को जन्म देकर मर जाती है। बच्ची को पालने



के लिए कोई तैयार नहीं होता अतएव नाजबीबी उस बच्ची को अपने साथ ले जाने का निर्णय लेती है। बीस-पच्चीस घरों वाली यह किन्नरों की बस्ती है जो शहर से अलग है। ये किन्नर दिनभर अपने-अपने क्षेत्र में गा-बजाकर अपना जीवनयापन करते हैं और आपस में मिल-जुलकर रहते हैं। कभी झगड़ा हो जाता है तो अपने गुरुजी (मतलब गुरु) के पास जाकर सब शांत हो जाता है।

गुरु उस बच्ची के संबंध में नाजबीबी को समझाते हैं कि इस बच्ची को अनाथालय में देना उचित होगा। सकीना का तर्क था कि अभी इस बच्ची की देखभाल जरूरी है। गुरुजी का दृष्टिकोण व्यावहारिक था पर बड़ी होने पर और मोह लगेगा। तब नहीं छोड़ते बनेगा। फिर इतनी सुंदर बच्ची हमारे पास रहेगी तो उसका जीवन भी हमारी तरह नारकीय बन जायेगा। पर्याप्त विचार-विनिमय के बाद उस बच्ची का नाम सोना रखा जाता है, क्योंकि सारे धर्म में सोना कीमती और चमकदार माना गया है। नाजबीबी उस बच्ची की अभिभावक बनी और उसे पढ़ाने का सोचने लगी परंतु इसमें कई समस्याएँ थीं। फीस, कपड़े, पुस्तकें आदि खरीदने के लिए धन तो चाहिए। वह अपने क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में नाच-गाने के लिए चली गई वहाँ पर उस क्षेत्र के किन्नरों ने उस पर हमला कर दिया घायल होकर वह गुरुजी की शरण में आई।

उपन्यास में नाजबीबी की कथा के साथ समानान्तर मानवी की कथा भी चलती है। मानवी एक दैनिक समाचार-पत्र में पत्रकार है। मानवी स्त्रियों के प्रश्नों, उनकी समस्याओं, उनकी उन्नति के लिए समर्पित लेखिका ने मानवी के माध्यम से नारी विमर्श का चित्रण किया है।

मानवी का जीवन, उसकी सोच, उसकी मानसिकता को उजागर करने के बाद उपन्यासकार फिर से नाजबीबी और सोना की कथा प्रस्तुत करती है। पाठक नाजबीबी और सोना

की कथा में मग्न है तभी मानवी की कथा प्रारंभ हो जाती है। इससे कथा में कौतुहल का निर्माण होता है, एक 'सस्पेन्स' बना रहता है। पाठक बेचैन हो जाता है यह जानने के लिए कि नाजबीबी और सोना का आगे क्या हुआ? तभी मानवी टपक पड़ती है और जब पाठक मानवी की कथा में रम ही रहा था कि नाजबीबी और सोना उपस्थित हो जाते हैं।

जब नाजबीबी सोना के लिए स्कूल जाते समय पराटे बनाती है तभी अकस्मात उसे अपनी माँ की स्मृति हो आती है कि वह भी उसके लिए यही करती थी। और फिर सोना, मानवी कुछ समय के लिए ओझल हो जाते हैं और पूर्वदीप्ति शैली में कथा नाजबीबी के बचपन से प्रारंभ हो जाती है। नाजबीबी का नाम नंदरानी था। उसके पिता सेना में मेजर थे। जो उसके जन्म पर फूट-फूटकर रोये थे। नंदरानी की दीदी ने हिजड़ों के डर से मम्मी को उसके जन्म के दूसरे दिन ही नानी के यहाँ भेज दिया था। ताकि नंदरानी की त्रासदी किसी को ज्ञात न हो। माँ दिन-रात बढ़ता हुआ नंदरानी का शारीरिक गठन देखकर चिंतित होती। एकांत में रोती रहती। नंदरानी को भी अपने देह के साथ विधाता का क्रूर मजाक समझने लगा था, परंतु मम्मी-पापा और भाई-बहनों की दुलार भरी सुरक्षा के कारण वह बेफिकीर रहती थी। नंदरानी मम्मी को धैर्य बंधाती थी कि वह पढ़-लिखकर डॉक्टर बनेगी अपने माता-पिता की सेवा करेगी। यह जरूरी नहीं कि सभी लड़कियों का विवाह हो। उसकी सुजाता मैडम तो पचास वर्ष की है परंतु उन्होंने विवाह नहीं किया। नंदरानी की त्रासदी एवं नियति यह थी कि कक्षा आठ तक पहुँचते-पहुँचते उसके अन्य स्त्रियोचित अंगों के उभार के साथ चेहरे पर श्यामवर्ण रोए भी उभरने लगे थे। सब कुछ छिपाकर सामान्य जीवन जीने की इच्छा भी नष्ट होने लगी और उसे स्कूल न भेजकर प्रायवेट पढ़ाने का निश्चय किया गया। यहीं लेखिका ने नंदरानी की कथा को अधूरा छोड़ नाजबीबी और सोना की कथा प्रारंभ की।



पाठक को फिर से कौतुहल में छोड़ दिया। नंदरानी का आगे क्या हुआ, यह जानने के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ी। यथार्थ यही है कि उपन्यास की कथा में इस प्रकार के मोड़ आना, उपन्यास को कौतुहलपूर्ण बनाता है। नाजबीबी ने तय कर लिया कि वह छैलू को सोना का चाचा बतलाएंगी और पिता की मृत्यु एवं माँ खटाल पर काम करती है। नाजबीबी ने सोना को समझाया कि यह किसी से न कहना कि उसकी माँ दूसरों के घर नाचती-गाती है। कहना कि खटाल पर काम करने जाती है।

मानवी नारी उद्धार गृह की लड़कियों का साक्षात्कार लेना चाहती है। उसे नारी उद्धार गृह की लड़कियों का साक्षात्कार लेने का आदेश मिल जाता है। वह वहाँ के साक्षात्कार को रिकार्ड करती है। जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवता रमण करते हैं। परंतु सत्य तो यह है कि पूजा तो दूर की बात है, उन्हें अपने ही घर में उचित स्थान मिल जाए, सम्मानपूर्वक जीने का अधिकार मिल जाए यही उनके लिए सौभाग्य की बात है और यह सौभाग्य कितनों को मिल पाता है, यह एक विचारणीय प्रश्न है। शोषण, प्रताड़न और मानवीय अधिकारों से वंचित नारियों के पग यदि आवेश के किसी क्षण में देहरी से बाहर निकल जाते हैं तो क्या परिणति होती है यह इन नारियों के बयान से स्पष्ट होता है। कमरजहों की त्रासदी यह है कि उसके सौतेले पिताजी उसे बहुत मारते थे। एक दिन पांच लिटर मिट्टी का तेल उससे गिर गया तब पिताजी की मार के डर से वह भागकर नारी उद्धार में आ गयी थी। आशा अपनी सास की ज्यादाती से तंग आकर घर से भागी तो गुंडों ने उसके जेवर छीन लिए तब पुलिस ने उसकी मदद की और वह नारी संरक्षण गृह पहुँच सकी। पूनम की त्रासदी यही है कि वह लड़की के रूप में जन्म लेने के कारण पिताजी मारते थे और एक दिन उसे घर से निकाल दिया था और वह इस उद्धारगृह में पहुँची थी।

मानवी के साक्षात्कार के माध्यम से लेखिका ने नारी-जीवन का उत्पीड़न प्रस्तुत किया है।

नाजबीबी की पीड़ा यह है कि वह अपने परिवार से अलग हो गयी थी। जब वह नंदरानी के रूप में किन्नर बस्ती में आयी तो महताब गुरु ने उसे समझाया था कि 'देखो, अब यही दुनिया तुम्हारी है। आज से भूल जाओ कि तुम कहाँ पैदा हुई थी। कौन माँ-बाप है, इसी में तुम्हारी भी भलाई है, उनकी भी नहीं तो बदनामी और दुःख छोड़कर कुछ नहीं मिलेगा। बेसरा माता की शरण में आ गई हो, अगला जनम सुधारो। अपना नाम तक भूल जाओ आज से। क्या नाम है तुम्हारा है तुम्हारा ? नंदरानी रघुवंशी। ठीक है आज से तुम्हें सब नाजबीबी पुकारेंगे।' नंदरानी कभी-कभी पिताजी से पी.सी.ओ. जाकर बात कर लेती थी। एक दिन उसे पता चला कि उसकी माँ कैंसर से पीड़ित है, तब उसने माँ को मिलने का निश्चय लिया। सोना की महताब गुरु एवं छैलू को जिम्मेदारी सौंपकर वह कानपुर की बस में बैठी। बस में उसे माँ की याद आयी। उसने माँ को कहा था कि वह उनकी बदनामी न हो इसलिए हिजड़ों की दुनिया में आ गई थी। वह जानती है कि यदि उसका हाथ-पैर अपंग होता, दिमाग खराब होता तो भी माता-पिता उसे रख लेते परंतु वह तो किन्नर है।

नाजबीबी को याद है कि एक बार अचानक उसके माता-पिता उसे मिलने किन्नरों की बस्ती में आये थे और वह माँ को गले से लगाकर रोई थी। माँ भी अपनी बेटी नंदरानी का नया स्वरूप देखकर काठ हो गई थी। किस्मत कहाँ से कहाँ ला पटकती थी उनकी बेटी को। माँ एकटक उसकी काली कोठरी निहारती रही थी। कहाँ साफ हवादार कमरे में प्रतिदिन चादर बदलकर सोनेवाली उनकी बिटिया और कहाँ यह सीलन-भरी दमघोटू कोठरी। माँ तो नंदरानी को साथ ले जाना चाहती थी परंतु वह जानती थी कि वह उनके साथ रह नहीं सकती।



महताब गुरु ने नंदरानी के माता-पिता से यही कहा कि 'आप इस बस्ती में नहीं रह सकते बाबूजी, और अपनी बेटी को अपने साथ रख भी नहीं सकते दुनिया में बदनामी और हँसी-हँसार के डर से। हिंजडी के बाप कहलाना न आप बरदाश्त कर पाएंगे और न आपके परिवार के लोग। लूली-लंगड़ी होती तो भी आप इसे अपने साथ रख सकते थे इसलिए इसे अब इसके हाल पर छोड़ दीजिए। यही उसका भाग्य था।

यथार्थ यह है कि व्यक्ति के जीवन में आकस्मिकता एवं दुर्घटनाएँ बनी रहती है। नाजबीबी के साथ भी यही हुआ जब वह माता-पिता के पास कानपुर पहुँची कि कैंसरग्रस्त माँ को मिल सके तो उसे वहाँ पहुँचकर पता चला कि दोपहर में ही माँ की मृत्यु हुई है और लोग एक घंटे पहले उसके मृत शरीर को रामघाट ले गये हैं। उसे लगा माँ उसे रामघाट बुला रही है वह तुरंत रामघाट पहुँची। श्मशान में एक हिजड़े को देखकर लोग कानाफूसी करने लगे। एकाएक लोगों ने देखा कि चिता ठंडी कर चलनेवाले उस वृद्ध व्यक्ति से हिंजडा जाकर लिपट गया है। भीड़ कौतुहल से उन दोनों के पास सिमट आई थी। नाजबीबी बिलख-बिलखकर रोती हुई कह रही थी-पापा, मेरी मम्मी को एक बार दिखा दो, पापा कहाँ है मेरी मम्मी ?' उसका भाई नंदन मन ही मन नंदरानी को कोस रहा था। उसे मम्मी के मरने के दुःख से अधिक भारी यह शर्मिंदगी लग रही थी। क्या सोच रहे होंगे नाते-रिश्तेदार कि जिसे वे मृत समझ रहे थे, वह तो हिंजड़े के रूप में आज तक जीवित है। नंदन ने उसे वहाँ से निकल जाने का आदेश दिया तब वह इतना ही कह सकी कि वह खुद ही चली जा रही है पर पापा का ध्यान रखना। वे बहुत दुःखी हैं। वह कभी भी उसकी जिन्दगी में दखल नहीं देगी। बस पापा बचे हैं उनको संभालकर रखना। नाजबीबी किन्नर है परंतु उसमें एक पुत्री की भावुकता समाहित है।

मानवी डी. एम. आनंद कुमार से मिलने जाती है तब दोनों में समसामयिक स्थिति पर वार्तालाप होता है। लेखिका ने इस प्रसंग की योजना नारी विमर्श को दृष्टि में रखकर ही की है। नाजबीबी को अपनी रोजी-रोटी की चिंता है, क्योंकि उसके ग्राहक अब अपने परिवार को सीमित रखते हैं। एक या दो बच्चे तक। फलस्वरूप किन्नरों के धंधों पर आँच आयी है, वे लोग रोटी के लिए संघर्ष कर रहे हैं। मल्लू साव का कहना है कि 'तुम्हें अपनी रोटी की चिंता है। दम्पति को ज्यादा बच्चे पैदा करने पर अपनी रोटी की चिंता है, सरकार को सबकी रोटी की चिंता है। चिंता में तो पूरा देश जल रहा है। नाजबीबी संवेदनशील है जब उसे ज्ञात होता है कि सिपाहियों पर गोली बरसाकर अपराधी जंगल भाग गये परंतु एक दरोगा की गोली से मौत हो गयी। तब नाजबीबी को उस दरोगा के परिवार के प्रति हमदर्दी होती है। उसके छोटे-छोटे बच्चे होंगे। औरत होगी, किसके भरोसे जीएंगे सब ? नाश हो इन पापियों का... अब भगवान को अवतार लेना चाहिए। पाप का घड़ा भरता जा रहा है लोगों का। तभी मल्लू साव ने नाजबीबी से जानना चाहा कि उसका गिरिया (पुरुष रखैल) रामसरन जो पुलिस में है दिखाई नहीं देता क्योंकि वह अक्सर उसकी दुकान पर बैठकर नाजबीबी को बुलवाता था और कभी नाजबीबी उसके साथ रिक्शे में जाती थी और रात को लौटती थी। तब नाजबीबी ने बताया कि उसका तबादला हो गया है।

मानवी किन्नरों पर फीचर लिखना चाहती थी अतएव वह महताब गुरु से वार्तालाप करना चाहती है। वह बातचीत को टेप करना चाहती थी इसलिए टेप लगाकर वह महताब गुरु की प्रतीक्षा करने लगी। यहाँ आने के पूर्व तक वह सड़क या गली-मौहल्लों में किन्नर समूह का हठ और हरकतें देखकर सहमा करती थी। एक वितृष्णा और भय मन में छाया रहता था। न पुरुष, न स्त्री... या फिर शायद पुरुष और स्त्री-दोनों ही। यानी



अर्द्धनारीश्वर... नहीं नहीं पूरी देह का विभाजन ऐसा नहीं इनका कि यह संज्ञा दी जा सके। कहीं दाढ़ी-मूँछ पूरे चेहरे पर तो कहीं उरोजों का उभार संपूर्ण स्त्री की तरह। नाजबीबी जैसी किन्नर भी देश के प्रति ईमानदार है। उनमें राष्ट्रीयता है। जब मानवी ने प्रश्न किया कि कुछ लोग स्वार्थ के कारण जाति, धर्म के नाम पर दंगे करवाते हैं, भ्रष्टाचार फैलाते हैं, आप भी इसी देश के हैं, आपको कैसा लगता है यह सब? आपको क्या करना चाहिए? तभी नाजबीबी ने उत्तर दिया अपने देश के लिए तो देखिए, हम लोग मर मिटेंगे। जिस तरह फौज में एक सिपाही भर्ती होता है, पुलिस होता है 'सरकार हमें भी हथियार दे दो। मैं तो लड़ूँगी। लड़ते-लड़ते हिन्दुस्तान के पीछे अपनी जान दे दूँगी। बस, मेरी यही तमन्ना है। मैं मेजर की लड़की हूँ, मेजर की।' यह सुनकर मानवी चौंक पड़ी थी। हाँ, उसके पिता मिलिट्री के मेजर थे। वह हिजड़ी पैदा हुई थी। परंतु भगवान ने उसे इस लायक नहीं रखा कि वह अपने परिवार के साथ रहे।

नाजबीबी यह भी बताती है कि उनकी देवी बेसरा माता है जिसका मंदिर अहमदाबाद में है। वहाँ वर्ष में एक बार सभी किन्नर एकत्र होते हैं, नाचते-गाते हैं, भंडारा करते हैं। जिसका खर्च हर जिले के गुरु देते हैं। किन्नर अपनी कमाई का एक हिस्सा गुरु को देते हैं। मानवी ने जब महताब गुरु से धर्म के संबंध में उनके विचार जानना चाहे तब उनके उत्तर में दार्शनिक चिंतन ही व्यक्त होता है। यथा 'राम भी वहीं, रहीम भी वही। कोई जनेऊ पहनकर हिंदू बच्चा तो पैदा नहीं होता। न कोई मुसलमान बच्चा खतना करवाकर। ये तो हम लोगों की भावना है कि यह मेरा अल्ला है, यह मेरा गॉड है। सभी धर्मों के लोगों का खून थोड़ा-थोड़ा इकट्ठा करिए, उसे देखकर कोई डॉक्टर या साइंस बता दे कि यह हिंदू का खून है, यह मुसलमान का, तो हम अपना नाम बदल दें।' मानवी को आश्चर्य हो रहा था कि महताब गुरु के मस्तिष्क में इतना ज्ञान कहाँ से आया है। उन्होंने

यह भी कहा कि जो लोग देश के साथ विश्वासघात करते हैं, विघटनकारी कार्यों में संलग्न हैं, वंदे मातरम् का विरोध करते हैं उन्होंने हिजड़ों से सबक लेना चाहिए क्योंकि वे न तो गद्दार हैं और न गद्दारी करते हैं। वे प्रेम से रहते हैं किसी से नफरत नहीं करते। वे लोग इन्सान थोड़े ही हैं जो आपस में नफरत करेंगे। मानवी का जब 'हमसे सबक लें -शिखण्डी गुरु' शीर्षक से फीचर प्रकाशित हुआ तो तहलका मच गया था। एक दिन अचानक नाजबीबी मानवी के घर पहुँची। मानवी ने ध्यान से नाजबीबी को देखा गले में मंगलसूत्र था, कानों में बड़े-बड़े झुमके, बालों को ढंग से संवारा गया था। हाथों में दो मोटे कड़े जामुनी रंग की साड़ी से मेल खा रहे थे। सब कुछ कितना स्त्रियोचित, परंतु चेहरे पर ताजा बनाई गई दाढ़ी का नीलापन, आवाज पुरुष के समान।

एक दिन अकस्मात नाजबीबी की बस्ती में पुलिस आ गयी। वे सोना को खोज रहे थे और उसे नारी उद्धार केन्द्र में ले जाना चाहते थे। नाजबीबी को दुःख हुआ। ऐसी पीड़ा उसे तब भी इतनी नहीं हुई थी जब उसने मम्मी-पापा का घर छोड़ा था। नाजबीबी को स्मरण हो आया कि वह अपने माता-पिता के घर रहती थी तब नंदिनी दीदी की शादी थी परंतु ऐन वक्त पर लड़केवालो ने मना कर दिया। नाजबीबी अर्थात् नंदरानी समझ गई कि उसके शरीर का विज्ञान ही नंदिनी के विवाह में बाधा बना हुआ है। एक दिन पास के घर का पता पूछते कुछ हिजड़े उनके दरवाजे पर आये थे वे वहाँ नेग मांगने आये थे और उन्होंने नंदरानी को देख लिया। उन्होंने नंदरानी की माँ से कहा 'मतवा, वो हमारी बिरादरी की है। तब माँ ने क्रोध से उन्हें भाग जाने के लिए कहा। तब उन्होंने कहा था 'आप चाहे जितना छिपा लीजिए, एक न एक दिन उसे अपनी बिरादरी में आना होगा। वो आपके पास रह ही नहीं पाएगी। हम कोई जोर-जबरदस्ती नहीं करेंगे? वो खुद चली जायेगी अपनी



बिरादरीवालों के संग। और उनकी बात सत्य हुई। एक दिन नंदरानी नाजबीबी बनकर किन्नरों की बस्ती में रहने लगी। जब सोना को माहवारी के कारण दर्द हुआ और उसे डॉक्टर के पास ले जाना पड़ा था। तो उसी डॉक्टर की शिकायत पर पुलिस सोना को किन्नरों की बस्ती से निकालकर नारी उद्धार आश्रम में भेजना चाहती थी।

नारी उद्धार गृह की वार्डन ने सोना से बात करनी चाही परंतु वह रोती रही। तब वह समझ गयी कि यह कम उम्र में बहुत ही सताई हुई लड़की है और इसे उद्धार गृह में विवशता में आना पड़ा है। सोना अब समझदार हो गयी है उसे माँ का धंधा पसंद नहीं है और वह कहती भी है कि जब वह पढ़-लिखकर नौकरी करने लगेगी तो माँ से यह धंधा छुड़वा देगी। भारत में अनेक नारी उद्धार आश्रम या महिला आश्रम ऐसे हैं जहाँ समाज सेवा के नाम पर लड़कियों का शोषण किया जाता है। एक दिन समाचार-पत्र में यह समाचार प्रकाशित होता है कि 'नारी उद्धारगृह की वार्डन गिरफ्तार, कई नेता और अधिकारी इसकी लपेट में।' छैलू ने नाजबीबी को समाचार-पत्र का हवाला देते हुए बताया कि एक लड़की किसी तरह वहाँ से भाग निकली और उसीने बयान दिया है कि वहाँ उनसे गलत धंधा करवाया जाता है। बड़े-बड़े लोग रोज आते हैं। उनमें से किसी को छाँटकर कहीं ले जाते हैं और फिर पहुँचा जाते हैं। जो लड़की विरोध करती उसे मारा-पीटा जाता है। मानवी सोना को वहाँ से निकलवाना चाहती है परंतु स्वयं सोना इसके लिए राजी नहीं होती।

उपन्यास में पात्रों नंदरानी उर्फ नाजबीबी, सोना, महताब गुरू, छैलू, शबनम, चमेली, मंजू, मानवी का चरित्र-चित्रण उपन्यास को सजीवता प्रदान करता है। तारक में आदर्श है, पांडेय धूर्त है, हरीक उदंड स्वभाव का है। मन्ना बाबू संतराव राजनीति के स्याह पक्ष को उजागर करते हैं। रीता देवी नारी

उद्धार की संरक्षिका है परंतु नारियों का शोषण करवाती है। नाजबीबी का चरित्र किन्नर होते हुए भी उदार है, उदात्त है, संवेदनशील है, इसीलिए वह किसी पगली की प्रसव-वेदना से उसे मुक्त करती है। उसमें मानवीयता है। तथाकथित सुसंस्कृत एवं सम्य कहे जानेवाले लोगों से अधिक ममता, पर दुःख कातरता है। पगली से जन्मी अवैध संबंधों का प्रतिफल बच्ची को कोई संभालने के लिए तत्पर नहीं है, तब नाजबीबी उसकी अभिभावक बनती है किसके भरोसे छोड़े इस बच्ची को? कोई पालने को तैयार नहीं। ऐसे छोड़ देने पर कहीं कुत्ते-कौवे नोचकर... नहीं नहीं। इस प्रकार नवजात कन्या आ जाती है हिजड़ों की बस्ती में अब उसकी माँ है नाजबीबी। यह प्रसंग नाजबीबी के चरित्र का उज्ज्वल पक्ष है। वह उसे स्कूल में भर्ती करवाती है। किन्नर विमर्श के कारण इतना परिवर्तन अवश्य हो रहा है कि इस उपेक्षित समाज की ओर ध्यान दिया जाने लगा है।

यमदीप में किन्नरों के धर्म पर विचार परिलक्षित होता है। चाहे कोई किन्नर जन्म से हिंदू हो या मुसलमान इससे उसकी नियति बदलती नहीं है। वे स्वयं अपने को किसी धर्म से सम्पृक्त नहीं करते हैं। उदाहरणार्थ नाजबीबी का जन्म एक हिंदू परिवार में हुआ था, उसका नाम नंदरानी था परंतु जब वह किन्नरों की बस्ती में आयी और महताब गुरू की चेली बनी तो उसे नाजबीबी नाम दिया गया। नंदरानी के पिता मेजर है। फौज के एक उच्च अधिकारी है। साहस एवं शौर्य से संपन्न व्यक्तित्व है। परंतु नंदरानी के जन्म पर फूट-फूटकर रोते हैं क्योंकि इस तृतीय लिंग की लड़की के कारण उन्हें समाज के समक्ष लज्जित होना पड़ेगा। इसमें दोष किसी का नहीं है। दुर्भाग्य है। समाज के डर से नंदरानी का निष्कासन होता है मानो एक पौधे को नरम-उर्वरा मिट्टी से उखाड़कर सख्त मिट्टी में प्रतिकूल जलवायु के बीच पटक दिया गया है।



यमदीप उपन्यास में संबंध में भावना चोटिया लिखती है-“‘यमदीप’ उपन्यास सदियों से प्रताड़ित समाज का अभिन्न हिस्सा रहे किन्नरों की मूल संवेदना को व्यक्त करता है। लेखिका ने अपने उपन्यास के माध्यम से किन्नर समाज की यौनिक संरचना के विविध पहलुओं को भी प्रत्येक आधार पर सामने लाने का प्रयास किया है।”³ नीरजा माधव की विशेषता यह है कि उन्होंने यमदीप में किन्नरों के उदार-उदात्त चरित्र, उनकी संवेदनशीलता, कर्तव्य के प्रति निष्ठा, अपनी आराध्य देवी बेसरा माता और गुरु के महत्व का विस्तृत चित्रण किया है। लेखिका ने मुख्य कथा के साथ-साथ समाज एवं राजनीति में व्याप्त विसंगतियों, विडम्बनाओं का पर्दाफाश किया है। राजनेताओं की कथनी एवं करनी में अंतर्विरोध, रिश्तत, भ्रष्टाचार एवं नारी उद्धार के नाम पर उनका यौन शोषण, नारी-उद्धार संस्थाओं का स्याह पक्ष, इन संस्थाओं के संरक्षिकाओं का भ्रष्ट आचरण, महिला आश्रमों की अनाथ विवश लड़कियों को सोने के अंडेवाली मुर्गियाँ कहकर उनका यौन शोषण आदि का चित्रण मन-मस्तिष्क को झकझोरता है।

समग्रतः ‘यमदीप’ उपन्यास किन्नरों के बाह्य एवं आंतरिक जीवन का यथार्थकन है। इसमें मानवतावादी दृष्टि है,

नाजबाबी की सोना के प्रति वत्सलता है, बेरोजगारी के कारण रोट्टी की समस्या के लिए देह व्यापार का उल्लेख है, भ्रष्ट राजनेता हैं, किन्नरों के रीति रिवाज हैं। सामाजिक विसंगति एवं विडम्बना है, किन्नरों का मनोवैज्ञानिक चित्रण है, स्त्री विषयक दृष्टि है, नारी उद्धार गृहों का पर्दाफाश है, प्रतीकात्मकता है। एक नये अछुते जीवन की मर्मस्पर्शी गाथा है, किन्नर जीवन की त्रासदी है।

संदर्भ सूची:

1. संपा. बाहरी डॉ. हरदेव- राजपाल हिंदी शब्दकोश, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6, संस्करण- 2005, पृ. 166
2. संपा. डॉ. मेहरा दिलीप- हिंदी कथा साहित्य में किन्नर समाज, माया प्रकाशन, 6A/540, आवास विकास हंसपुरम, नीबस्ता, कानपुर-208021, प्रथम संस्करण 2018, पृ. 124
3. संपा. डॉ. मेहरा दिलीप- हिंदी कथासाहित्य में किन्नर जीवन, वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110002, प्रथम संस्करण 2019, पृ. 78